

आलस्य और अलबेलापन - 43

अव्यक्त बापदादा :-

» _ » प्रतिज्ञा टूट होने के बजाए कमजोर होने का वा प्रतिज्ञा में लूज होने का एक ही मूल कारण है जैसे कितनी भी बड़ी मशीनरी हो लेकिन एक छोटा-सा स्कू (पेंच) भी लूज (ढीला) हो जाता तो सारी मशीन को बेकार कर देता है। ऐसे प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए प्लैन बहुत अच्छे अच्छे बनाते हो, पुरुषार्थ भी बहुत करत रहत हा लाकन पुरुषार्थ वा प्लन का कमजोर करने का स्कू एक ही है - 'अलबेलापन'।

» _ » वह भिन्न-भिन्न रूप में आता है और सदा नये-नये रूप में आता है, पुराने रूप में नहीं आता। तो इस 'अलबेलेपन के लूज स्कू को टाइट करो। यह तो होता ही है-नहीं होना ही है। चलता ही है, होता ही है-यह है अलबेलापन। हो जायेगा-देख लेना, विश्वास करो, दादी-दीदी मेरे ऊपर ऐतबार करो-हो जायेगा। नहीं। बाप जैसा बनना ही है, अभी-अभी बनना है।

» _ » तीसरी बात प्रतिज्ञा को टूट से कमजोर बनाने का आधार पहले भी हँसी की बात सुनाई थी कि है। नजदीक की नज़र है-स्व को देखना, स्व को बदलना और दूर की नज़र हैदूसरों को देखना उसमें भी कमजोरियों को देखना, विशेषता को नहीं। इसलिए उमंग-उत्साह में अन्तर पड़ जाता है। बड़े-बड़े भी ऐसे करते हैं, हम तो हैं ही छोटे।

» _ » तो दूर की कमजोरी देखने की नज़र धोखा दे देती है। इस कारण प्रतिज्ञा को प्रैक्टिकल में ला नहीं सकते। समझा, कारण क्या है? तो अभी स्कू टाइट करना आयेगा वा नहीं? 'समझ' का स्कू-ड्राइवर (पेचकश) तो है ना, यन्त्र तो है ना। (18.01.1993)

➤ प्रतिज्ञा

- » _ » जब भी हम प्रतिज्ञा करते है तो उसमे द्रढ़ता चाहिये
- » _ » ऐसे नही सोचना है की दुसरो ने नही की तो हम भी क्यों करे?
- » _ » जो भी हम प्रतिज्ञा करे
 - किसी भी चीज के लिये करे
 - वो अभी और इसी वक्त से
 - इसे फॉलो करना चालू कर देना है
 - तो द्रढ़ता आयेगी

➤ प्रतिज्ञा में द्रढ़ता कैसे लाये ?

- उसके फायदे के बारे में सोचना
 - की यह करने से क्या क्या फायदा मुझे हो सकता है
- उसके नुकसान के बारे में सोचना
 - समय जा रहा है
 - पैसे बर्बाद हो रहे है
 - बुद्धि एकाग्र नही होती

- पुरुषार्थ के नुकसान के बारे में सोचना

→ जब तक समझ नहीं है तब तक द्रढ़ता नहीं आयेगी

- अपने मन को पूरी तरह से समजाके ही

▶ कोई भी प्रतिज्ञा करनी है

- जहा सम्पूर्ण समज आ जाती है वहा फिर प्रतिज्ञा करने की

भी आवश्यकता नहीं रहती है

▶ क्युकी हम उसका तुरंत स्वीकार कर लेते है

▶ तो इसके लिये UNDERSTANDING / ज्ञान के स्तर

अर्थात समझ को बढ़ाना है

▶ जहा ज्ञान है वहा लाइट और माईट स्वतः आ जाती है

▶ जहा पर मास्टर नॉलेजफुल बन गये वहा पर कोई भी

बंधन हो ही नहीं सकते है

→ द्रढ़ता थी पर गहराई नहीं थी

→ अंदर से नहीं छोड़ा

→ दमन हो गया था

- समझ नहीं थी

- ज्ञान के एक एक महावाक्य को समझने के लिये

- मनन चिंतन चाहिये

- गहराई से मनन किया हुआ तो,

▶ स्वीकार कर सकेंगे

- कही पर लिखा हुआ है, किसी ने कहा

▶ इसलिये स्वीकार नहीं कर लेना है

▶ उसके उपर थोडा रिसर्च करना है

▶ उसको समझना है

▶ तभी अंतरमन उसको स्वीकार करता है

→ बचपन के कोई पुराने संस्कार, जिसका हमे भी पता नहीं होता

है..जैसे

- लगाव

- नाम की कामना

- आसक्ति

- मोह

- सम्मान की कामना

- गरीबी

»→ _ »→ कोई भी प्रतिज्ञा तुरंत जल्दबाजी / हड़बड़ी में नहीं कर लेना है

→ वो पूरी नहीं होगी

- उसके लिये पहले तैयारी की आवश्यकता है

- क्या प्रतिज्ञा करनी है ?
- क्यों करनी है ?
- कैसे करनी है ?
- अभी करनी है ?
- की कुछ समय के बाद करनी है ?

»_» तो प्रतिज्ञा करने के लिये

- सबसे पहले तो समज की आवश्यकता है
- उसकी तैयारी करनी है
- उसके फायदे का सोचना है
- उसके नुकसान का सोचना है
- MOST IMPORTANT

- मैं कितना कर सकता हु
- मेरी ABILITY कितनी है

► उसी अनुसार प्रतिज्ञा करनी है

»_» जो भी प्रतिज्ञा करो

- वो दृढ हो
- शक्तिशाली हो

- उसको बार बार **REVISE** करते रहना है

- बुद्धि में लाते रहना है की,
- मैंने यह प्रतिज्ञा की है
- मेरा जीवन कैसा है?
- और मैं कर क्या रहा हु?

»_» जो भी प्रतिज्ञा करो उसे सिर्फ CONSCIOUS MIND तक नही रखनी है

→ उसे **SUB - CONSCIOUS MIND** तक लेके जाना है, उसके लिये

- उसे बार बार REVISE करने की आवश्यकता है
 - जब सो रहे है, तो सोते समय REVISE करना
 - जब उठे, तो उठते ही प्रतिज्ञा को याद करना
- प्रतिज्ञा को अमृतवेले बाबा के पास REVISE जरूर करना है
- एक है स्वयं से प्रतिज्ञा
- एक है बाप से प्रतिज्ञा

► यह जीवन बाप का है और उसीके लिये

है..यह है सबसे बड़ी प्रतिज्ञा
